श्री श्रीविद्या-साधना

श्रीसौभाग्य-कवच-स्तोत्र-साधना

पूर्व-पीठिका-श्री पार्वत्युवाच

केलास-शिखरे रये, सुखासीन सुरारंभितम्।
गिरीशं गिरिजा शतुला, रत्नोज्वेदान्त-पारंगे:।
प्रणाम्य पराय भक्तया, तमपृश्चि कृतावर्जलि:।
रहस्यं रक्षणं कि वा, सर्व-सम्पत्-करं वद ॥१॥

श्रीशिवोवाच ॥

श्रुणु देवि! प्रवक्ष्याभि, यम्मात् वं परिपृश्चि।
यस्य श्रवणं - मात्रेण, मयः - श्रीतर्न जयते:।
एतत् सौभाग्य-कवचं, रहस्याति-रहस्यकरम्।
सौभाग्य-कवचं देवि!, श्रुणु सौभाग्य-दायकम्॥२॥

विनियोग ॥

अः अस्य श्रीसौभाग्य-कवच-रात्रोतरं श्रीआनन्द-भैरवो ऋषि:। अनुष्टुप छन्चः।
श्रीरामायण-धूमदी देवता। अः वल्ली सो: बीजं। हीं वल्ली शक्ति:। आ हीं क्रों कीलकं।
सर्व-सौभाग्य-सिद्धकर्षं पाठे विनियोग:।

मन्त्रनिधि-न्यास ॥

शिरसि श्रीआनन्द-भैरवाय-ऋषयें नमः। गुणे अनुष्टुप-छन्चसे नमः। ह्रदिये
श्रीसौभाग्य-धूमदी-देवताय नमः। गुहे अः वल्ली सो: बीजाय नमः। पादयोऽहीं वल्ली-
शक्तियें नमः। नाभो आ हीं क्रों कीलकाय नमः। सर्वः सर्व-सौभाग्य-सिद्धकर्षं पाठे
विनियोगाय नमः।

कर-न्यास ॥

अः अः अंगुष्ठाय नमः। अः वल्ली तर्जनीयाय नमः। अः सो: मध्यमायाय नमः। अः
एं अनामिकायाय नमः। अः वल्ली कनिष्ठिकायाय नमः। अः सो: कर-तल-कर-पृच्छायाय नमः।

अः न्यास ॥

अः एं हदवाय नमः। अः वल्ली शिरसे स्वाहा। अः सो: शिखाये वषट। अः एं
कवचाय हुम। अः वल्ली नेत्र-त्रयाय वोषट। अः सो: अश्माय फट।
ध्यान

ऐहिक-पर-फल-दात्रीमेषानीं सनसि भावेये मुद्राम्।
ऐनव-कलावतसामेषाय-स्फुरण-परिणति जगताम्।
वलीवत-दैत्य-ह-त्रीं विलन्न-मनस्का महेश्वरारिष्टाम्।
वल्लूत-जनेष्ठ-कर्त्त्री कलिपत-लोक-प्रभा नमामि कलाम्।
सोभाय-दिव्यक-निधि सौभ-कच-चुव-विचलवलि-मालम्।
रोशीमरो-तत्या सोन्विधारित-बुध-जीर्णीं कलथे।
पाश-पाणि सूर्य-पाणि भावेये चाप-पाणि शार-पाणि देवतम्।
यत-प्रभा-पतल-पाएं जगत पदम-राग-गणि-मण्डपायते।
हेमा-हेमी-पीठ-स्थितासिद्ध-पुरुरी-दयामाना दिलाजल।
पुष्पेश्वराः-पाराकुश-कर-कमलां रङ-वेषाति-रक्ताम्।
विश्वादक्षिणमुदारमिणि-मय-कलशीं: पञ्च-शाक्तिशिर्षे: चर—
श्रापे: वल्लूताधिेका भजत भगवती भूतिवामनत्य-यामे।

मानस-पूजन

अृं ल पृथिवी-तत्त्वात्मक गन्ध श्रीललिता-तिपुरा-प्रीतये समपयामि नमः।
अृं ह आकाश-तत्त्वात्मक पुंख श्रीललिता-तिपुरा-प्रीतये समपयामि नमः।
अृं व वायु-तत्त्वात्मक धूंप श्रीललिता-तिपुरा-प्रीतये द्वापयामि नमः।
अृं र अग्नि-तत्त्वात्मक वीं श्रीललिता-तिपुरा-प्रीतये वर्षयामि नमः।
अृं व जल-तत्त्वात्मक नैवेंद्र श्रीललिता-तिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
अृं सं सर्व-तत्त्वात्मक तामूं श्रीललिता-तिपुरा-प्रीतये समपयामि नमः।

मूल कवच-पाठ

शिखांग्रं सतं जातु, मम तिपुरु-सुचरी।
शिरं: कामेश्वरी नित्य, तत्-पूर्व भग-मालिनी।
नित्य-विलासवल्लातं, भेसुण्ड तस्य परिचितम्।
वल्ल-वार्तिन्येव वाम, मुख विशेषवरी तथा।
शिव-दूरी ललात में, त्वरिता तस्य दक्षिणम्।
तद-वाम - पार्वतमवतात्, तथैव कूल - सुचरी।
नित्या पातु भुजोमध्ये, भुवं नील - पताकिनी।
वाम-भुवं तु विजया, नयनं सर्व - मक्षला।
श्री श्रीविद्या-साधन

ज्वाला-मालिन्यक्षिप चामं, चित्रा रक्षतु पक्षमणि।
दक्ष-श्रोत्रं महानित्या, चामं पातु महोदयम || ५ ||
दक्षं चामं च चुटुकं, कपोली क्षेत्रं-पालिका।
दक्षं-नासा-पुष्टं दुर्गा, तदन्तं तु भारती || ६ ||
नासिकाग्रं सदा पातु, महान-लक्ष्मीसिरसतरम्।
आणिमा दक्षं-कांसं, महिमा च तदन्तकम् || ७ ||
दक्षं-गुणं च गरीमा, लाठिमा चोतरं तथा।
उन्निष्ठकं प्राणिः-सिद्धि, प्राकायमप्राणोर्तकम् || ८ ||
ईशिवमूर्त्यं-दन्तांच, हाळो-दन्तां वशिलककम्।
रस-सिद्धिमिर रसनं, मोक्ष-सिद्धिमिर तालुकं || ९ ||
तालूं-मूलह्रं ब्राह्मीं-माहेश्वरं च रक्षतां।
कौमारी चिथुकं पातु, तद्घ: पातु वैण्यी || १० ||
कणं रक्षतु वाराहीं, चैद्याणी रक्षतार्धे।
कुकाकं तु चामुण्डा, महालक्ष्मीस्तु सर्वं || ११ ||
सर्वं-संक्षोभिणी-मुद्रा, सक्नं रक्षतु दक्षणं।
तदन्तं रावणी-मुद्रा, पायांसं-ह्रं क्रमात् || १२ ||
आक्षणी वशय-मुद्रा, चोन्मादिभ्यं दक्षणं।
भुजं महाकुषा चामं, खेचरी दक्षं-कक्षकम् || १३ ||
चामं-कक्षं बीज-मुद्रा, योनि-मुद्रा तु दक्षणं।
लसत्र निकिळिणी-मुद्रा, चामं-भगं प्रपालयेत् || १४ ||
श्रीकामाकर्षणी नित्या, रक्षतार्घ दक्षं-कूपरम्।
कूपरं चाममवतात्, सा कुद्याकर्षणी तथा || १५ ||
अहंकारकर्षणी तु, प्रकाणं पातु दक्षणं।
शाब्दकर्षणिका चामं, स्पष्टकर्षणिकाःवतु || १६ ||
प्रकोष्ठं दक्षणं पातु, रूपाकर्षणिकेतरम्।
रसाकर्षणिका पातु, मणि-वनमं च दक्षणं || १७ ||
गाधाकर्षणिका चामं, चित्ताकर्षणिकाःवतु।
करमं दक्षणं, धैर्यकर्षणी पातु वामकम् || १८ ||
स्मृत्याकर्षणियं चामं, नामाकर्षणिकेतरम्।
बीजाकर्षणिका पायात्, सततं दक्षणाङ्गुली: || १९ ||
श्री श्रीविद्या-साधना

आत्माकर्षिणिका तन्त्रा, अमृताकर्षिणी नर्मानुः
शरीराकर्षिणी वाम - नर्मानुः रक्षतु सर्वदा ॥ २० ॥
अन्नचं - कुक्सुमा शक्ति:, पातु दक्षिण - स्तनोपरि ॥
अन्नचं - मेखला चाण्य - स्तनोध्वरमुखि - रक्षतु ॥ २१ ॥
अन्नचं - मदना दक्ष - स्तन तच्छुचुकं पुनः
रक्षतादनिशं देवी, हानं भानं - मदनातुरा ॥ २२ ॥
अन्नचं - रे वा वामं तु, वक्षोजं तस्य चूषकम्
अन्नचं - वेंगीनी क्रोमनास्यांकुंशासवतु ॥ २३ ॥
अन्नचं - मालिनी पायाद:, वक्षं - स्तलमहर्षिचानम्
सर्वं-संकोभिणी शक्तिहर्तु सर्वं-द्राविणी परा ॥ २४ ॥
कुक्सुमं सर्वकर्षिणी तु, पातु पारवच न दक्षिणम्
आहलदिनी वामं-पारवं, मध्यं सम्मोहिनी विरम ॥ २५ ॥
सा सर्वं-स्तम्भिणी पृष्ठ, नामि वा सर्वं-जृष्मिणी
वर्षाक्री वरितं-देशं, सर्वं राजिनी मे करिम ॥ २६ ॥
सा सर्वमालिनी मे, पायाजज्ञानं-मण्डलम्
सर्वार्थं-साधिणी शक्ति:, नितंबं रक्षतान्नम् ॥ २७ ॥
दक्ष-सिफचं सदा पातु, सर्वं-सम्पति-पूरिणी
सर्वं-मन्त्र-मधी शक्ति:, पातु वामं-सिफचं मम ॥ २८ ॥
पायाते वा कुकुतदं-हन्नं, सर्वं-दन्नं-क्षयकरी
सर्वं-सिंहदं-प्रवा देवी, पातु दक्षिण वंक्षणम् ॥ २९ ॥
सर्वं-सम्पत्तं-प्रवा देवी, पातु मे वाम-वंक्षणम्
सर्वं-प्रियकरी देवी, गुहं रक्षतु मे सदा ॥ ३० ॥
मेथ्रं रक्षतु मे देवी, सर्वं-मझल-कारिणी
सर्वं-कामं-प्रवा देवी, पातु युकं तु दक्षिणम् ॥ ३१ ॥
पायाते वा तदन्नम्पं तु, सर्वं-दुःख-विमोचिनी
सर्वं-मुरुं-प्रशमनी, देवी पातु गुढं मम ॥ ३२ ॥
पातु देवी गुहं-मध्यं, सर्वं-विज्ञ-विनारिणी
सर्वं-सुन्दरी देवी, रक्षतादं दक्षं-सविधंकम् ॥ ३३ ॥
श्री श्रीविद्या-साधना

वाम-सावित्र-तलं पायात् शर्म-सौभाग्य-दायिनी।
अद्वीतं मम शर्मज्ञा, देवी रक्षतु वस्त्रिणम्।। 34 ।।

वामादिवं सर्व-शक्ति:, देवी पातु युगं मम।
सर्वश्रव्यो-प्रदा देवी, वक्ष-जानु सर्वास्वतु।। 35 ।।

सर्व-ज्ञान-मयी देवीं, जानुमयं ममावतात्।
अयाद देवीं दश-जंघां, सर्व-व्याख्य-विनाशिनी।। 36 ।।

तद्विन्द्रा पातु देवीं सा, सर्वभार-स्वरुपिणी।
सर्व-पाप-हरा देवीं, गुलं रक्षतु दशिणम्।। 37 ।।

सर्वोन्नद-मयी देवीं, वाम-गुलं सदास्वतु।
पारिणं मे दशिणं पायाल, सर्व-रक्षन-स्वरुपिणी।। 38 ।।

अयाद् सदा सदा पारिणं, सर्वभिषं-फल-प्रदा।
वक्षाङ्गि-पार्श्व विशिष्टी, पूर्व वाम-देवता मम।। 39 ।।

सर्व कामेश्वरी चोर्ध्रमधो वाग्ग- देवता मम।
मोदिनी प्रपं पातु, विमला दशिणेतरे।। 40 ।।

अयुग्यीरूणा पातु, वक्ष-पाद-न्योऽज्ञाता।
तदन्या जानिन् पातु, सदा सर्वश्वरी मम।। 41 ।।

दश्व-वाम-पाद-तलं, कलिनी देवता मम।
कुर्वन्तु जृम्भणा वाणण्ड, चेलोक्याकर्षण मम।। 42 ।।

मोहं सहरतादिकु-कोदेंद्र भृज्ञमोक्षक्रमः
करोतु सततं पाशो, वर्षीकरणमद्वस्तुम्।। 43 ।।

विद्या-विद्यांकुशं नित्यं, स्तम्भन शान-संक्षेते।
पीठं मे काम-रूपाख्यं, पातु कामान्तिकं मन्।। 44 ।।

पूर्ण पूर्ण-गिरे: पीठं, कात्ति मे जनयेत् सदा।
जालंधरमन्य-जालंधर-पीठं मे रक्षतु।। 45 ।।

सायुज्येन निवातं प्रज्ञान, श्री-पीठं श्री-करं मम।
कामेश्वरी त्वात्म-तत्त्वं, रक्षेद् वज्रेश्वरी तथा।। 46 ।।

विद्या-तत्त्वं श्रीव-तत्त्वं, पायाश्रिष्टिग-मालिनी।
कामं विद्यान्महा-श्रृण्मृत्ताण्व-मानसम्।। 47 ।।

क्रोधं क्रोधपहा हन्यामन्युं पैतामबुजासनम्।
लोम चिदासनं हन्याव, देवयात्रामृत-रूप-भाक।। 48 ।।
मोहं संहरताल्चक्रं, मदं मन्नास्वन मम।
मातसर्य नारायणमत्रं, मम सानार्चन तथा। ॥ ४९ ॥
आधारं त्रिपुरा रक्षेत्, र्साधिक्षणं पुरे।
मणि-पूर्ण मणि-चोता, पायात् त्रिपुर-सूचरी। ॥ ५० ॥
अव्यासनहंत भव्या, नितं त्रिपुर-वासिनी।
विशुद्धै त्रिपुरा श्रीसच, आज्ञा त्रिपुर-मालिनी। ॥ ५१ ॥
इद्धां मे त्रिपुर-सिद्धा, त्रिपुरा चापि पिन्नलाम।
सुपुर्णां पातु मे नित्या, पायात् त्रिपुर-चैरी। ॥ ५२ ॥
त्रैलोक्य-महोहन् चक्रं, रोम-कूपाश्रं रक्षतु।
सर्वशा-पूरक चक्रं, साप्त-धारूङ्चक्रं रक्षतु। ॥ ५३ ॥
सर्व-संकोभं चक्रं, प्राणाद्य वायु-पञ्चकम्।
सोभाय-दायकं चक्रं, नागाध्यन्त-पञ्चकम्। ॥ ५४ ॥
सर्वर्थ-साधकं चक्रं, कारणाना चतुष्पदम्।
सर्व-रक्ष-करं चक्रं, रक्षतामै गुण-त्रयम्। ॥ ५५ ॥
सर्व-रोग-हरं चक्रं, पायात् पुर्वतंकं मम।
सर्व-सिद्धि-प्रवं चक्रमवासे कोश-पञ्चकम्। ॥ ५६ ॥
सर्वनन्द-मयं चक्रं, यशं कीर्ति च रक्षतु।
सौन्दर्य मन्नथं: पायाद्, धृतिशचापि रसिं मम। ॥ ५७ ॥
प्रीति मे पातु या प्रीति:; रूपं पातु वसन्तकं।
सशृगं कर्पकोधानं, महा-लक्ष्मी श्रियं मम। ॥ ५८ ॥
कार्तिक कपालिनी रक्षेत्, मन्दिरं मणि-मण्डप।
पुज्रान्त-शालक-निधिं: पायाद्, मार्गा पद्ध-निधिस्तथा। ॥ ५९ ॥
मार्गं के मंदकुरी रक्षेत्, मातृं मुकुंदं तथा।
योगिनी प्रकटयास्ता, नव-द्वाराणि पातु मे। ॥ ६० ॥
भोजने माणज्ञं-पूर्ण, मातृं क्रीडानेववतात्।
वने रक्षतु मां दुर्गा, जाग्रती दुष्ट-निग्रहे। ॥ ६१ ॥
त्रिधारशक्तृ: नेच्यु-वोष-त्रयं मल-त्रयम्।
दाकिन्यो योगिनी-मुख्यं: संहरतु ममालिनाम्। ॥ ६२ ॥
इच्छा-शक्तिः पुरुषोभवित, पातु मे ज्ञानमालिनि।
ज्ञान-शक्ति: प्रिया-शक्ति: वेदगय-विषयेष्वपि। ॥ ६३ ॥
हत-पदम-कर्णिका-मध्ये, हीणारी परि-रक्षतु।
वेखरी भ्रवण पातु, मध्यमा मननं पुनः। ६४।।
योगं रक्षतु परयन्ती, सकात्तु ज्ञान-परा मम।
ब्रह्माणी जागृतं पातु, शायानं वैण्डी तथा। ६५।।
सुपुष्टी चण्डका पातु, तुर्या मे मोह-कारिणी।
सवा मा भैरवी पातु, जगद्ध-भरण-पणिर्ता। ६६।।
चरणाभोराहान्द - परामृत - रसेषीत।
प्लाविनी कुण्डली पूर्णा, अत्तरान्त सवालकतात। ६७।।
अष्ट-दिक्षु महेन्द्राय, सायुधा: पान्तु सर्ववा।
पायाधुधारी विश्रं ब्रह्मा, विष्णुधकायुपोध:। ६८।।
अनावृतानि स्थानानि, कवचेन तु यानि मे।
तानि सर्वाणि रक्षतु, शिवाण्डा गुरवः: सवा। ६९।।

|| फल-श्रुति ||
एतत् सोभाग्य-कवचं, शाश्वं यस्तु पाठयेत्।
त्रित-सन्त्वं य: पश्चवा भक्त्या, श्रुण्यादि वा समाहित:। ९।।
तस्य श्रीक्रेण सिद्धभन्ति, सिद्धय सवानिमाध्य:।
गुठिका-पादकाश्य: शिष्यं: सम्भवन्ति च। २।।

वर्षादीव्यंष्ट - कमाणि, योगस्माचाराः शंभुः।
ब्रह्मा - विष्णु - गिरीशेन्द्र - कन्दर्घ - रतिभ: सह। ३।।
विचरन्ते तदर्णात, सिद्ध - गम्भर - सेवनात।
तस्य समर्ण-मात्रेन, ग्रह-भूत-पिशाचका:। ४।।
कीट-वृत्त प्र-पलायन्ते, कूम्भाण्डा भैरवादयः।

तस्याभिं-तयों-पतनात, प्रशास्त्यति महा-रुजः। ५।।
तत् - पाद - कमलासक्त - रजो - लेशानि - मर्श्नात।
वर्षयं भवति श्रीश्रेण: तैलावयं स-चराचरम्।
आबाल-महिला-भूमा:, किमु माया-विमोहिता:। ६।।

|| श्रीवामकेशवर-तन्त्रे नित्या-पोदशिकार्णे श्रीसोभाय-कवचम्। ||
श्रीश्रीविद्या-साधना

श्रीसौभाग्य-कवच-स्तोत्र-साधना (हिंदी-रूपांतर)

सुन्दर कैलास पर्वत पर सुख-पूर्वक बैठे हुए देवताओं से पूजित श्रीगिरीश (राक्षस जी) की वैदिक स्त्रोतों से स्तुति करके श्रीगिरिजा (पारवती) ने उन्हें परम भक्ति से प्रणाम किया और दाह कोड़कर कहा- ‘सब प्रकार की सम्पत्ति और रक्षा देनेवाला रहस्य कहिए।’ (१)

श्रीशिव जी ने कहा-देवि, तुम्हारे जौ पूछा है, उसे कहता हूँ। सुनो, जिसके सुनने मात्र से सांसारिक भय नहीं होते। यह सौभाग्य-कवच-रहस्य का भी रहस्य और सौभाग्य का दाता है। (२)

मूल-पाठ के अनुसार विनियोग, ऋषियादि-न्यास तथा षड़नाथ-न्यास करके श्लोक १ से ६ तक वर्णित ध्यान करना चाहिए। फिर कवच का पाठ करना चाहिए। यथा-

कवच-पाठ

मेरी शिखा की रक्षा सदा त्रिपुर-सुन्दरी करें। निरंतर की रक्षा निष्ठनित्य करें।

उसके पूर्व भाग (स्तर के पूर्व भाग) की रक्षा भाग-मालिनी करें।

नित्य-किल्लना सिर के दक्षिण भाग की तथा स्वरूपद्वारा सिर के पश्चिम की रक्षा करें।

वास्तव वाःसिन्द्रा सिर के चाम भाग की और विद्रोहवर्दी तुषक की रक्षा करें।

शिव-दूते मेरे ललाट को, ललाट के दक्षिण भाग की त्वरिता और ललाट के नाम भाग की रक्षा कुल-सुन्दरी करें।

निर्माण भू-भूत की और दाहिनी भाँंह की रक्षा नील-पताका करें।

ज्वाला-मालिनी बौँह आख की तथा रक्षा-पत्त्या की रक्षा चित्रा करें।

दाहिने कान की रक्षा महा-निर्माण और बौँह कान की रक्षा महोदया करें।

दाहिने और बौँह कपोल की रक्षा क्रमशः बुद्ध और श्रेण-पाठ करें।

दक्ष नासा-पुट के दुर्गा और बौँह नासा-पुट की रक्षा भारती करें।

दाहिनी क्षेत्र की रक्षा अष्टिर्मय सिद्धका और बौँह क्षेत्र की रक्षा महाभय सिद्धका करें।

दाहिने गंगा-स्तवल (कनपटी-स्वित पुका का समस्त दक्षिण) की रक्षा गामिया सिद्धका और बौँह गंगा-स्तवल की रक्षा खत्मिया सिद्धका करें।

उध्वोष्ण की रक्षा प्राप्ति सिद्धका और अभित्त की रक्षा प्राप्ताया सिद्धका करें।

ऊष्पर के दाँतों की रक्षा ईश्वर सिद्धका और नीचे के दाँतों की रक्षा बाहुल्य सिद्धका करें।

रसना (जीव) की रक्षा रस सिद्धका और तालू की रक्षा मोक्ष सिद्धका करें।

२५
रक्षा ब्राह्मी और माहेश्वरी करें। कौमारी चिन्हक (ठोड़ी या ठुड़ी) की तथा उसके नीचे के भाग की रक्षा वैष्णवी करें। १०।

कण्ठ की रक्षा वाराही और उसके निचले भाग की रक्षा इन्द्राणी करें। कुक्कुटिका (गद्दी के फिल्डे भाग) की रक्षा चामुण्डा और सब ओर से महादेव-लक्ष्मी रक्षा करें। ११।

dाहिने स्तन-धार (कन्धे) की रक्षा सर्व-संक्षोभिणी मुद्रा और बाईं कन्धे की रक्षा द्राविणी-मुद्रा करें। अंस-द्रुय (कन्धे की ठुड़ी) की रक्षा क्रमशः आकाशिणी-मुद्रा और वर्ष-मुद्रा करें।

dाहिनी भुजा की रक्षा उन्मादिनी-मुद्रा, बाईं भुजा की रक्षा महाकुरा-मुद्रा और दाहिनी काँख की रक्षा खेचरी-मुद्रा करें। १२-१३।

dाहिने कौंक की रक्षा बीज-मुद्रा करें। दाहिने भाग की रक्षा योनि-मुद्रा और बाईं भाग की रक्षा त्रिकण्डा-मुद्रा करें। १४।

dक्ष कूपर (कुहनी) की रक्षा त्रिकामाकर्षणी नित्या और बाईं कूपर की रक्षा बुद्धाकर्षणी करें। १५।

dाहिने प्रकाण्ड (भुजा के ऊपरी भाग) की रक्षा अह्न्माराकर्षणी और बाईं प्रकाण्ड की रक्षा शब्दाकर्षणी करें। स्वप्नाकर्षणी दाहिने प्रकोष्ठ (कुहनी से मणि-बन्ध के ऊपर के भाग) की रक्षा करें। तथा बाईं प्रकोष्ठ की रक्षा रुपाकर्षणी करें।

dाहिने मणि-बन्ध की रक्षा रसाकर्षणी करें। १६-१७।

dाहिने मणि-बन्ध की रक्षा गन्धाकर्षणी करें। दाहिने और बाईं करभ (पंकज के फिल्डे भाग, कर-पुड़) की रक्षा क्रमशः चित्राकर्षणी और वैयक्तिकर्षणी करें। १८।

स्मृतिकर्षणी और नामाकर्षणी बाईं और दाहिने तत्पर रक्षा करें। अंगुलियों की रक्षा बीजाकर्षणी करें। १९।

बाईं अंगुलियों की रक्षा आत्माकर्षणी, दाहिने नाखुमों की रक्षा अमृताकर्षणी तथा बाईं नाखुमों की रक्षा शचराकर्षणी करें। २०।

दाहिने स्तन के ऊपरी भाग की रक्षा अन्नकुसुमा शालक तथा बाईं स्तन के ऊपरी भाग की रक्षा अन्नकुसुमा मेखला करें। २१।

अन्नकुसुमा दाहिने स्तन की रक्षा करें, उसके चूक की रक्षा सदा अन्नकुसुमा मदनातुरा करें। २२।

अन्नकुसुमा रेखा बाईं स्तन की रक्षा करें, और उसके चूक की रक्षा अन्नकुसुमा वैगिनी करें। क्रोड़ (वक्ष-स्थल, छाती और कन्धों के बीच का भाग) की रक्षा अन्नकुसुमा करें। २३।

वक्ष-स्थल की रक्षा सदा अन्नकुसुमा मालिनी करें। हृदय की रक्षा सर्व-संक्षोभिणी करें। सर्व-विद्रार्णी कुख्षी (पेट) की रक्षा करें, उसके दाहि तरफ सर्वाकर्षणी, बाईं तरफ अहादिनी (सर्वहाद-करी) और मध्य में सम्मोहिनी (सर्व-सम्मोहिनी) सदा रक्षा करें। २४-२५।

पीठ की रक्षा सर्व-स्तम्भकर्षणी करें। नाभि की रक्षा सर्व-जूक्षणी करें। वस्त्र-देश (पेट का नाभि से नीचे का भाग, पेड़ू) की रक्षा वशाध्वरी (सर्व-वशाध्वरी) और काटि (कमर) की रक्षा सर्व-रज्ज्वी करें। २६।

जघन-मण्डल की रक्षा सर्वोच्च मादिनी करें।
श्री श्रीविद्या-साधना

सर्वधार्म-साधिनी शाति मेरे नित्यमः की रक्षा करें। २७।। दाहिने सिफार (कूल्हे) की रक्षा सर्व-सम्पत्ति-कारिणी और बांधि सिफार की रक्षा सर्व-मन्त्र-मयी शाति करें। २८।। दोनों कुलदरों (नित्यमः कूल) की रक्षा सर्व-दुनिया-क्षयब्रह्मी करें। दाहिने वंश्यय की रक्षा सर्व-सिद्धि-प्रदा देवी करें। २९।। वाम वंश्यय की रक्षा सर्व-सम्पत्-प्रदा देवी करें।

गुहा-स्थान की रक्षा सर्व-प्रियब्रह्मी करें। ३०।।

मेद्र (लिहा) की रक्षा सर्व-महंत-कारिणी करें। दाहिने मुख (अण्ड-कोष) की रक्षा सर्व-काम-प्रदा देवी करें। ३१।। दूसरे (बाम) मुख की रक्षा सर्व-दुख-विमोचनी करें। मेरी गुढ़ की रक्षा सर्व-मृत्यु-प्रशान्ति करें। ३२।। गुड़ा के मध्य भाग की रक्षा सर्व-विचन-निवारणी करें। दाहिनी सिक्क (जौँक की हड़ड़ी) की रक्षा सर्वभू-सुन्दरी करें। ३३।। बांधि सिक्क की रक्षा सर्व-सौभाग्य-दायिणी करें। दाहिने कास्तव की रक्षा सर्ववास देवी करें। ३४।। बांधि अष्टीव की रक्षा सर्व-शाति-देवी करें। दाह-जानु (जौँक) की रक्षा सर्वविष-प्रदा देवी करें। ३५।।

वाम जानु की रक्षा सर्व-जान-मणि देवी करें। दाह-जान (पिण्डली) की रक्षा सर्व-व्यास-विनाशनी करें। ३६।। दूसरी (बाम) जाना की रक्षा सर्वचार-स्वरुंचिणी करें।

दाहिने गुलफ (टवने) की रक्षा सर्व-पाप-हरा करें। ३७।। वाम गुलफ की रक्षा सदा सर्वनिन्द-मणि देवी करें। दाहिनी पारिण (एड़ी) की रक्षा सर्व-रक्षा-स्वरुंचिणी करें। ३८।। वाम पारिण की रक्षा सर्वपिल-फल-प्रदा देवी करें।

दाहिने पैर के पाप्ले के पार्वत की रक्षा बांधनी और बांधि की रक्षा वाम-देवत्व करें। ३९।। सब तरफ कामसर्वत्र तथा ऊपर-नीचे वाम-रेवता रक्षा करें। मोदनी दाहिने प्रप्त (पैर के अगले भाग) की और विमला बांधि प्रप्त की रक्षा करें। ४०।।

आँगुलियों की रक्षा अरुणा करें और दाहिने पैर के नाखुनों की रक्षा उपभोग करें। दूसरे (बांधि पैर के नाखुनों) की रक्षा जागिरी करें। सर्ववर्ती सदा मेरे दाहिने पाद-तल (तलुआ) की रक्षा करें। कौलिनी वाम पाद-तल की रक्षा करें। जूध्मण बाण भाग मेरे प्रति त्रातोक्त का आरंभ करें। ४१-४२।। बांधन मे समान चब्बील मोह का नाश इशु-कोदण्ड (इशु-चाप, ग्रंथि का बना धनुष) करें। पाश सदा अद्भुत वासिकरण करें। ४३।। राज-स्टूक के समय अंकुश स्थम्भन करें। कामानिक नान (इच्छाओं या कामानाओं से भरपूर मन) की रक्षा काम-रूप नामक पीठ करें। ४४।। पूर्णगिरि-पीठ पूर्ण (शरीरस्थर पूर्ण-गिरि पीठ) की रक्षा करते हुए कौलिनी उष्मन करें। जाल-धर-पीठ मेरे जाल-धर-पीठ की रक्षा करें। ४५।।
प्रज्ञा मुझे साथूर्य दें, श्रीपीठ मुझे स्री (दन) दें। कामेश्वरी-आत्म-तत्त्व की रक्षा करें। वचनेश्वरी-विद्या-तत्त्व की और श्री भगवान मालिनी-शिव-तत्त्व की रक्षा करें। काम आदि महाराजें से अमूर्तता (सुधा-सागर) रक्षा करें। ॥४५-४७॥ क्रोध का क्रोधापन, रोष का पैतामबुजासन, लोभ का चिङ्गासन, जो देवी के दिव्य-रूप के समान है, नाश करें। ॥४८॥ मोह का नाश चक्र (श्रीचक्र) करें। मदन (काम-वासना) का नाश मन-उपासना करें। मेरे मात्स्य का नाश सात्यासन करें। ॥४९॥ आधार (मूललाखार) की रक्षा तिरुपुरा और स्वाधिशाल की रक्षा पुरुषवरी करें। मणिपुर की रक्षा मणि-धोता तिरुपुरा-सुन्दरी करें। ॥५०॥

अनाहत चक्र की रक्षा भव्य तिरुपुरा-वासिनी करें। विशुद्ध-चक्र की रक्षा तिरुपुरा-श्री और आज्ञा-चक्र की रक्षा तिरुपुरा-मालिनी करें। ॥५१॥ इडा नाडी की रक्षा तिरुपुरा-सिद्धा और पिक्षा नाडी की रक्षा तिरुपुरा करें। सुपुम्मा की रक्षा तिरुपुरा-भौती करें। ॥५२॥ रोम-कूमर की रक्षा तिरुपुरा-मोहन चक्र करें। सत्य-धातुओं (रस, रक्त, मांस, वसा, अर्ध, म भज्ज का तथा ३ वारी) की रक्षा सर्वरूपा-पुरुष-चक्र करें। ॥५३॥ प्राणादि (१ प्राण, २ अपर, ३ समान, ४ उदान तथा ५ व्याह) बायु-फक्त की रक्षा सर्व-संस्करण-चक्र करें। नाग आदि पाँच अनेकों (बायुओं-१ नाग, २ कूमर, ३ कक्कुट, ४ देवदत्त और ५ धनुज) की रक्षा सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र करें। ॥५४॥ कारण-चतुरव्य की रक्षा सर्वरूप-साधक-चक्र करें। गुण-त्रय (१ सत्य, २ ज्ञ, ३ तम) की रक्षा सर्व-रक्षा-कर-चक्र करें। ॥५५॥

पुर्वुष्टक की रक्षा सर्व-रोग-हर-चक्र करें। कोष-पुज्जक (१ अत्र-मय कोष, २ प्राण-मय कोष, ३ मन-मय कोष, ४ विज्ञान-मय कोष तथा ५ आनन्द-मय कोष) की रक्षा सर्व-प्रसद-चक्र करें। ॥५६॥ यश्न और गोत्य की रक्षा सर्वनन्द-मय-चक्र करें। सौन्तर की रक्षा मन-मय (क्रम-प्रवर) करें। धृति (चक्रवत) की रक्षा रति करें। ॥५७॥ प्रीति (प्रेम, सौहार्द, भ्रातुक, आत्मत) की रक्षा प्रीति करें। रूप की रक्षा बसन्त करें। रस्कुप की रक्षा कर्मकोमायन और स्री (दन आदि) की रक्षा महालक्ष्मी करें। ॥५८॥ तात्त (मनोहरता) की रक्षा कपालिक करें, मंदिर (घर) की रक्षा मणि-मण्डप करें। पुंज की रक्षा शाप-निधि और भयाप (पल्ला) की रक्षा पत्न-निधि करें। ॥५९॥ मार्ग में स्वस्मक्षरी रक्षा करें। मुकुंद की रक्षा मात्म्भक करें। नव-द्वार (१ मुख, २-३ नासा-पुरु-हय, ५-६ नेत्र-हय, ६-७ कल्य-हय, ८ लिङ्ग, ९ गुड़ा-ये नव-द्वार हैं) की रक्षा प्रकटा आदि योगिनियाँ करें। ॥६०॥

भोजन-काल में अत्र-पूराण, खेलने के समय मात्म्भक रक्षा करें। दुष्टों के निग्रह के लिए सदा जागेनवाली दुर्गा वन में रक्षा करें। ॥६१॥ तीन प्रकार का अहंकार, निष्ठुरता, दोष-निर्म (१ राज, २ वात, ३ पित्र), मल-निर्म (२ आणव, २ मायफ, ३ कायम) का नामा
श्री श्रीविद्या-साधना

डाकिनी-योगिनी सदैव करें।

इष्टा-शक्ति और गुरु-भक्ति की रक्षा मेरा ज्ञान करें।

ज्ञान-शक्ति, क्रिया-शक्ति, वैराग्य तथा विषयों की रक्षा हृदय-कमल की कार्याक मे निवास करनेवाली ही है।

वैकल्पिक श्रवण-शक्ति की रक्षा करें।

मन की रक्षा मध्यमा करें।

योग की रक्षा पयाणती और ज्ञान की रक्षा परा-वाणी करें।

ब्रह्माणी सोते समय और वैष्णवी जागते समय रक्षा करें।

सुन्दरत (प्राणव निद्रा) में चंद्रिका और तुर्यावस्था (चौथी अवस्था, जिसमें आत्मा-ब्रह्म से तदुकार हो जाती है) मोह-कारिणी रक्षा करें।

सदैव जागृत-पदलो भैरवी मेरी रक्षा करें।

परामुद ने प्राप्तित चरण-कमलों-पुर्णा कुंडली अन्तरान्त की सदा रक्षा करें।

आठों दिशाओं (१ पूर्व, २ आने, ३ दक्षिण, ५ नैश्चर्य, ५ पश्चिम, ६ वायु, ७ उत्तर और ८ ईश्वर) की रक्षा महेंद्रा आदि (१ इन्द्र, २ अतिर, ३ यम, ४ निनाद, ५ वरुण, ६ वायु, ७ कुबेर या सोम और ८ ईश्वर) अपने-अपने आयुर्धों (१ वज्र, २ शक्ति, ३ दण्ड, ४ खड़ा, ५ पांड, फाँकुला, ७ गंदा और ८ शूल) के साथ सदैव करें।

उद्ध्व-दिशा में ब्रह्मा तथा चक्क-धारी विष्णु अथि: दिशा की रक्षा करें।

जो स्थान कवच से अनावृत हैं, उनकी रक्षा शिव आदि गुरु-जन करें।

१०। फल-श्रुति।

श्रीशिव जी द्वारा कथित उक सौभाग्य-कवच जो भक्ति-पूर्वक तीनों सन्ध्यों में पढ़ता, पढ़वाता या सुनता है, उसे श्रीस्वान ही अग्निमा आदि अष्ठ-सिद्धियाँ (१ अग्निमा, २ लघिनमा, ३ प्राप्ति, ५ प्राक्षायम्, ५ महिममा, ६ ईश्वरव, ७ वशितव और ८ कामावसायिता) तथा गुंतिका, पादुका आदि (१ गुंतिका, २ पादुका, ३ रत्न-सिद्धि, ४ अन्तर्धन, ५ खड़ा, ६ खचरी, ७ विज्ञकणी और ८ वेताल-सिद्धि) आठ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

वार्षिक्रण आदि आठ कम्य (१ वार्षिक्रण, २ शान्ति, ३ आकर्षण, ४ मोहन, ५ सतर्क, ६ निद्रेण, ७ उच्चारण और ८ मारण) तथा अष्ठद्वारा योग (१ यम, २ निमय, ३ अनन, ४ प्राणवयाम, ५ प्रत्यासन, ६ ध्यान, ७ धारणा और ८ समाधि) से युक थोकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, कामदेव और रति के साथ सर्वत्र विचरता हुआ सिद्धियों और गन्धवों से सेवित होता है।

उसके स्मरण मात्र से ग्रह, भूत, रिपाक्षत कुमाण्ड तथा भैरव आदि कीड़े-भकों के समान भाग जाते हैं। उसके पैरों से स्पुष्ट जल से महारोग भी शान्त हो जाते हैं।

१३। उसके चरण-कमलों की धूप के स्वर्ण मात्र से चाराचर जैलोक्य शीघ्र ही वर्षा में हो जाते हैं। बालक, महिलाएं, राजा भी माया-पूर्वक उसके वर्षीभूत हो जाते हैं।

१४।